Dr. Shivajirao Ganesh Patwardhan

Dr. Shivajirao Ganesh Patwardhan, who devoted his entire life for the upliftment of leprosy patients, was born on 28th December 1892 in a small village Assangi of Jamkhandi District in Karnataka. He lost his parents in his childhood and therefore he left the place with his sister. He completed his pre college eduction at Pune in 1914. He received Diploma in Homoeopathic Medicine and Surgery Degree from Kolkata on completion of his education. He spent 18 months working for the Ramkrishna Mission.

In Pune, he came in contact with leaders like Bal Gangadhar Tilak, Gopal Krishna Gokhale, Gopal Ganesh Agarkar & Mahatma Gandhi and got involved in the Freedom Movement. He participated in Salt Agitation and Quit India movement. He was put in Shivani Jail. He came to Amravati (Maharashtra) in 1917 & made it his work place.

In his opinion treatment of disease was more important than its cure. He accepted the work of relief and rehabilitation of leprosy patients in 1946. He started Vidarbha Maharogi Seva Mandal on 26th September 1950 and obtained 450 acres of land from donors. It was inaugurated by Shri Vinoba Bhave. It is known as Tapovan today and is situated at Amravati, Maharashtra. This institute is devoted to the treatment of leprosy & rehabilitation of leprosy patients.

Earlier leprosy was considered as incurable disease and the persons affected by leprosy were forced to live away from the public eye. Dr. Patwardhan was inspired by Mahatma Gandhi's approach to this problem and started rehabilitating leprosy patients in Tapovan. In 1947 he explained the nature of work in Tapovan to Gandhiji in Sevagram. Gandhiji suggested him to start rehabilitation work along with treatment of leprosy affected persons & also create self confidence in them.

In those days Tapovan was the only organization working in field of leprosy. Due to the work carried out in Tapovan the number of patients increased. At present there is facility to admit 750 patients at a time which involves free treatment as well as post treatment rehabilitation.

Gandhi Memorial Leprosy Foundation, a pioneering organisation established in 1951 in the field of leprosy in India, instituted the award titled "International Gandhi Award" in 1986. Vidarbha Maharogi Seva Mandal, Tapovan was awarded with the International Gandhi Award for 2009 in recognition of their distinguished services.

Government of India honored Shri Shivajirao Ganesh Patwardhan by conferring on him Padma Shri Award in 1959. Shri Patwardhan was never interested in publicity. He passed away on 7th May, 1986. Anti Leprosy Day is celebrated every year on 30th January. The pioneering work done by Dr. Patwardhan in the field of leprosy treatment will remain a beacon of inspiration for all.

Department of Posts is pleased to issue a Commemorative Postage Stamp on Dr. Shivajirao Ganesh Patwardhan.

Credits:-

Text	:	Based on the material received from proponent
Stamp / FDC/Brochure Cancellation Cachet	:	Smt. Alka Sharma

भारतीय डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS
INDIA

डॉ. शिवाजीराव गणेश पटवर्धन
Dr. SHIVAJIRAO GANESH PATWARDHAN

विवरणिका
BROCHURE

डॉ. शिवाजीराव गणेश पटवर्धन

डॉ. शिवाजीराव गणेश पटवर्धन, जिन्होंने अपना पूरा जीवन कुष्ठ-रोगियों के उत्थान में लगा दिया, का जन्म कर्नाटक में जमखड़ी जिले के एक छोटे से गांव आसंगी में हुआ था। बचपन में ही उनके माता-पिता का देहान्त हो जाने के कारण, वे अपनी बहन के साथ उस स्थान को छोड़कर चले गए। उन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा 1914 में पुणे में प्राप्त की। अपनी स्कूली शिक्षा पूरी होने के बाद, उन्होंने कलकत्ता में होम्योपैथिक चिकित्सा और शल्य-चिकित्सा की डिग्री प्राप्त की। उन्होंने रामकृष्ण मिशन में 18 महीने तक कार्य किया।

पुणे में, वे बाल गंगाधर तिलक, गोपाल कृष्ण गोखले, गोपाल गणेश अगरकर और महात्मा गांधी जैसे नेताओं के संपर्क में आए और स्वतंत्रता-आंदोलन में शामिल हुए। वे 'नमक-आंदोलन' और 'भारत छोड़ो आंदोलन' में सहभागी हुए। उन्हें शिवानी जेल में डाल दिया गया। वे 1917 में अमरावती (महाराष्ट्र) में आए थे और उन्होंने इसे अपनी कर्मभूमि बनाया।

उनके विचार में बीमारी के इलाज से बेहतर उसकी रोकथाम करना है। उन्होंने 1946 में कुष्ठ राहत और पुनर्वास का कार्य करना प्रारंभ किया। उन्होंने 26 सितंबर, 1950 को विदर्भ महारोगी सेवा मंडल की शुरुआत की और दाताओं से 450 एकड़ भूमि प्राप्त की। इसका उद्घाटन श्री विनोबा भावे द्वारा किया गया। आज इसे तपोवन के नाम से जाना जाता है और यह अमरावती, महाराष्ट्र में स्थित है। यह संस्थान कुष्ठ रोग के उपचार और कुष्ठ रोगियों के पुनर्वास के लिए समर्पित है।

पहले कुष्ठ रोग को लाइलाज बीमारी समझा जाता था और कुष्ठ-रोग से प्रभावित व्यक्ति को जन-सामान्य से दूर रहने के लिए बाध्य किया जाता था। डॉ. पटवर्धन महात्मा गांधी के इस समस्या के प्रति उनके दृष्टिकोण से प्रेरित हुए और तपोवन में कुष्ठ-रोगियों के पुनर्वास का कार्य शुरू किया। 1947 में उन्होंने सेवाग्राम में गांधी जी के कार्य के समान ही तपोवन में कार्य की प्रकृति को स्पष्ट किया। गांधी जी ने उनको कुष्ठ-रोग से प्रभावित लोगों का उपचार करने के साथ-साथ उनका पुनर्वास करने का कार्य शुरू करने और उनके अंदर आत्मविश्वास भी पैदा करने का सुझाव दिया।

उन दिनों तपोवन, कुष्ठ-रोग के क्षेत्र में कार्य करने वाला एकमात्र संस्थान था। तपोवन में किए जाने वाले कार्य को देखते हुए वहां रोगियों की संख्या में वृद्धि हुई। इस समय, तपोवन में एक साथ 750 रोगियों को नि:शुल्क भर्ती करने के साथ-साथ, इलाज करवाने के बाद उनके पुनर्वास की सुविधा भी उपलब्ध है।

भारत में कुष्ठ-रोग के क्षेत्र में 1951 में स्थापित एक अग्रणी संगठन, गांधी मेमोरियल कुष्ठ-रोग फाउंडेशन ने 1986 में "अंतर्राष्ट्रीय गांधी पुरस्कार" की शुरुआत की। विदर्भ महारोगी सेवा मंडल तपोवन को, उसकी विशिष्ट सेवाओं का सम्मान करते हुए 2009 में अंतर्राष्ट्रीय गांधी पुरस्कार दिया गया।

भारत सरकार ने 1959 में श्री शिवाजीराव गणेश पटवर्धन को पद्मश्री से सम्मानित किया। श्री पटवर्धन ने प्रसिद्धि पाने में कभी रुचि नहीं दिखाई। 7 मई, 1986 को उनका निधन हो गया। प्रतिवर्ष 30 जनवरी को कुष्ठ-रोग निवारण दिवस मनाया जाता है। कुष्ठ-रोग के उपचार के क्षेत्र में डॉ. पटवर्धन द्वारा किए गए उल्लेखनीय कार्य को कभी भुलाया नहीं जा सकता।

डाक विभाग डॉ. शिवाजीराव गणेश पटवर्धन पर एक स्मारक डाक-टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार:-

मूलपाठ : प्रस्तावक द्वारा उपलब्ध कराई गई सामग्री पर आधारित

डाक टिकट/प्रथम दिवस आवरण/ विवरणिका/विरूपण : श्रीमती अलका शर्मा

भारतीय डाक
India Post

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	:	500 पैसा
Denomination	:	500 p
मुद्रित डाक टिकटें	:	600225
Stamps Printed	:	600225
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक-टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the stamp, first day cover and information brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5.00